Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

बिहार

फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर

BIHAR POLICE SUB-ORDINATE SERVICES COMMISSION

भाग – 3

इतिहास, कला-संस्कृति एवं राजनीति

SIERRA INNOVATIONS

भारत का इतिहास

प्राचीन भारत का इतिहास

अध्याय	पृष्ठ संख्या
(1) सिन्धु घाटी सभ्यता	1
(2) वैदिक काल (साहित्य)	5
(3) धार्मिक आन्दोलन (बौद्धधर्म एव जैन धर्म)	10
(4) महाजनपद काल	17
(5) विदेशी आक्रमण	18
(6) मौर्य वंश	19
(7) मौर्योत्तर काल	26
(8) गुप्त वंश	30
(9) गुप्तकालीन प्रशासनिक व सामाजिक व्यवस्था	32

मध्यकालीन भारत का इतिहास

(1) इस्लाम एव शासक	45
(2) भारत पर अरब आक्रमण	46
(3) सल्तनत काल (गुलाम वंश)	47
(4) खिलजी वंश	49
(5) तुगलक वंश	52
(6) सैय्यद वंश	54
(7) लोदी वंश	55
(8) सल्तनतकालीन प्रशासन एव स्थापत्य कला	55
(9) मुगल काल	59
(10) मुगलकालीन प्रशासन एव कला	68
(11) विजयनगर साम्राज्य	74
(12) बह्मनी साम्राज्य	77
(13) सूफीवाद	78
(14) प्रमुख आंदोलन	80
(15) मराठा	83

आधुनिक भारत का इतिहास

(1) भारत में यूरोपीय शक्तियों का आगमन	85
(2) बंगाल एवं प्लासी का युद्ध	90
(3) लॉर्ड वैलेजली की सहायक संधि प्रथा एवं भू-राजस्व पद्धतियां	99
(4) भारत के गवर्नर जनरल एवं उनके कार्य	110
(5) भारत के वायसराय एव उनके कार्य	115
(6) 1857 की क्रान्ति	118
(7) भारत के अन्य विद्रोह	122
(8) सामाजिक एव धार्मिक सुधार आन्दोलन	127
(9) राष्ट्रीय आन्दोलन	131
(10) 1909 का भारत परिषद् अधिनियम (मार्ले-मिन्टो सुधार)	137
(11) राष्ट्रीय आन्दोलन का तृतीय चरण (1919-1947)	139
(12) भारत सरकार अधिनियम - 1935	149
(13) भारत छोडो आन्दोलन	152
(14) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947	155
(15) भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन	155
(16) प्रमुख व्यक्तित्व	163
(17) भारत का संवैधानिक विकास	164
(18) बिहार का इतिहास	167

भारतीय कला एव संस्कृति

(1) भारतीय संस्कृति का परिचय	202
(2) विरासत	202
(3) इण्डो इस्लामिक स्थापत्य कला	208
(4) शिल्पकला	211
(5) मूर्तिकला	211
(6) वस्त्रनिर्माण	212
(7) चित्रकला	213
(8) नृत्यकला	217
(9) रंगमंच	221
(10) साहित्य	222
(11) बिहार की कला एवं संस्कृति	226

भारत का संविधान

(1) संविधान की पृष्ठभूमि एवं संविधान सभा	241
(2) भारतीय संविधान के स्त्रोत	242
(3) अनुसूचिया एव भाग	243
(5) प्रस्तावना	244
(6) भाग - 1 संघ एवं उसके राज्य क्षेत्र	246
(7) मूल अधिकार	248
(8) राज्य के नीति निदेशक तत्त्व	257
(9) मौलिक कर्त्तव्य	258
(10) संघ की कार्यपालिका	261
A. राष्ट्रपति	
(11) उपराष्ट्रपति	266
(12) मंत्रिमण्डल	268
(13) संसद	269
(14) भारत का नियत्रक एव महालेखा परिक्षक	280
(15) राज्य की कार्यपालिका (भाग-6)	281
A. राज्यपाल	
(16) राज्य का विधानमंडल	283
(17) सर्वोच्च न्यायालय	283
(18) उच्च न्यायालय	286
(19) आपातकालीन उपबंध	289
(20) केन्द्र एव राज्य सम्बन्ध	294
(21) पंचायतीराज	298
(22) संविधान की विशेषताएं एवं संशोधन (अनुच्छेद 368)	300
(23) संवैधानिक एव गैर संवैधानिक आयोग	304
(24) नागरिकता	308
(25) प्रधानमंत्री	310
(26) बिहार की राज्यव्यवस्था	311

प्राचीन भारत का इतिहास

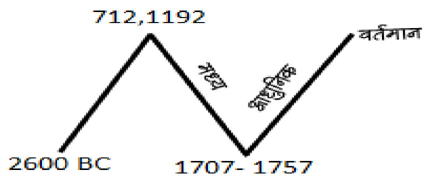

कालक्रम

1. 2600	BC - 1900 BC	सिन्धुघाटी सभ्यता
2. 1900	BC - 1500 BC	-----------
3. 1500	BC - 1000 BC	ऋग्वैदिक काल
4. 1000	BC - 600 BC	उत्तरवैदिक काल
5. 600	BC - 321 BC	महाजनपद काल (बौद्ध, जैन)
6. 321	BC - 184 BC	मौर्य काल
7. 184	BC - 321 AD	मौर्योत्तर काल
8. 319	AD - 550 AD	गुप्तकाल
9. 606	AD - 647 AD	हर्षवर्द्धन
10.750	AD - 1000 AD	राजपूत काल
11.1192 (1206)	- 1526 AD	सल्तनत काल
12.1526	AD - 1707 (1858)	मुगल काल
13.1707 (1757)	- वर्तमान	आधुनिक काल

1. सिन्धु घाटी सभ्यता

- इसे "हडप्पा सभ्यता" भी कहा जाता है ।
- यह कांस्ययुगीन सभ्यता थी ।
- यह विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओ मे से एक है । उत्कृष्ट नगर व्यवस्था एवं जल निकासी व्यवस्था इसको विशिष्ट बनाती है ।
- चार्ल्स मेसन - 1826 ई. सबसे पहले सभ्यता की ओर ध्यान आकर्षित किया ।
- जॉन बर्टन व विलियम बर्टन - 1856 ई हडप्पा नगर का सर्वे किया ।
- सर जॉन मार्शल (ASI - महानिदेशक) - 1921 ई पूर्व
  इन्होने दयाराम साहनी को हडप्पा मे उत्खनन करने के लिए नियुक्त किया ।
- कालक्रम - 2600 से 1900 B.C. (New Ncert)
  रेडियो कार्बन (C^{14})
  2250 से 1750 B.C. (Old Ncert)

- विस्तार -

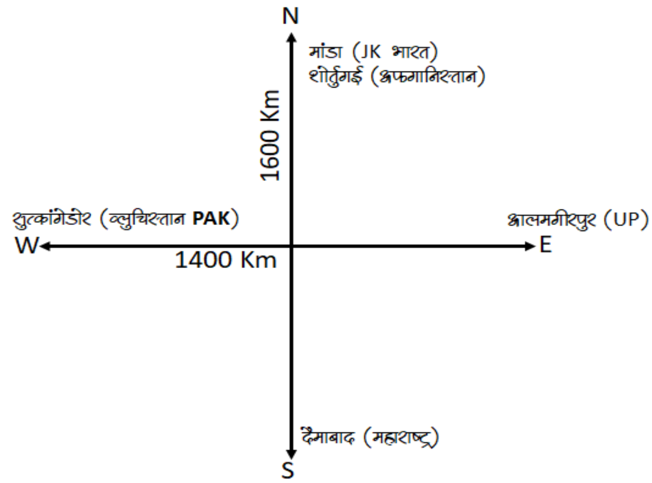

- पिग्गट ने हडप्पा एवं मोहनजोदडो को सिन्धु सभ्यता की जुँडवा राजधानी बताया है ।
- धोलावीरा एवं राखीगढी भारत में सबसे पुरातन स्थल है ।
- आजादी के समय अधिकांश पुरास्थल पाकिस्तान मे चले गये ।
- बडे नगर (पाकिस्तान)
  गनेडीवाल
  हडप्पा
  मोहनजोदडों

नगर नियोजन -

- उत्कृष्ट नगर व्यवस्था
  सिन्धु घाटी के समकालीन सभ्यताओ मे इस विशेषता का अभाव ।
- नगर ग्रिड पद्धति पर आधारित थे अर्थात शतरंज के बोर्ड की तरह सभी नगरों को बसाया था । सभी मार्ग समकोण पर काटते थे ।
- सबसे चौडी सडक 34 फिट की मिलती है जो सम्भवतः राजमार्ग रहा होगा ।
- घरो मे उत्कृष्ट नाली व्यवस्था (जल निकासी हेतु)
- बडी नालियो को ढक कर रखते थे ।
- भवन के अन्दर सामान्यतः 3 या 4 कक्ष, रसोईघर, 1 विद्यालय स्नानागार एवं कुआं होता था ।
- कालीबंगा से अलंकृत ईंटें प्राप्त होती है ।
  कच्ची एवं पक्की ईंटो का प्रयोग करते थे ।
  ईंट का आकार - 1 : 2 : 4
- कालीबंगा से लकडी की नालियों के साक्ष्य मिलते है ।
- नगर 2 भागों मे बाँटा हुआ होता था । पहला भाग - दुर्गीकृत होता था (शासक वर्ग)

तथा दूसरा भाग सामान्य । (मजदूर, कारीगर, व्यापारी आदि)

- **राजनीतिक व्यवस्थाः –**
  ज्यादा जानकारी नहीं है । सम्भवतया पुरोहित राजा (Prist King) या व्यापारी वर्ग के हाथ में शासन व्यवस्था रही होगी पिग्गट ने ------- जुडवा राजधानी --- ।

- **आर्थिक व्यवस्था – कृषि**
  - खेती व्यवस्था – प्रमुख कार्य
  - कालीबंगा से जुते हुए खेतों के साक्ष्य मिले है । एक साथ दो – दो फसल बोने के साक्ष्य मिले है (कालीबंगा)
  - गेहूँ मटर, जौ, तिल, मोटा अनाज (ज्वार), रागी का प्रयोग करते थे ।
  - उत्तर हडप्पा काल मे चावल के साक्ष्य भी मिलते है । लोथल से चावल के दाने एवं रंगपुर से चावल की भूसी मिली है ।
  - सिंचाई (कुँओ एवं) नदियो के माध्यम से होती थी ।
  - नहरों के साक्ष्य भी मिलते है – शौर्तुगई (AF) (OXUS नदी के किनारे स्थित)
  - धौलावीरा से कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य मिले है । सम्भवतः नहरो के माध्यम से सिंचाई करते थे ।
  - अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) होता था । हडप्पा तथा मोहनजोदडो से विशाल अन्नागार के साक्ष्य मिलते हैं।

पशुपालन
- बैल, भैंस, बकरी, भेड, खरगोश, कुत्ता आदि पालतु पशु थे ।
- मोहरो पर कूबड वाले बैल का अंकन बहुत अधिक मिलता है ।
- घोडे एवं ऊँट से ज्यादा परिचित नहीं थे । सुरकोटडा से घोडे की अस्थियाँ मिलती हैं ।

उद्योग
- चुन्हुदडों एवं लोथल से मनके बनाने का कारखाना मिलता है ।
- चाक पर बर्तन बनाने का कार्य होता था ।
- बर्तनों को आग से पकाते भी थे ।
- भट्टे के साक्ष्य भी मिलते है । कच्ची व पक्की ईंटो का प्रयोग होता था ।
- लकडी के कारखाने भी थे ।
- सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि से परिचित थे । (ताँबा + टिन = कांस्य)
- बहुमूल्य पत्थर "कार्नेलियोन" का प्रयोग भी करते थे

धार्मिक स्थिति – (धार्मिक जीवन)
- बहुदेववाद में विश्वास रखते थे ।
- मूर्तिपूजा करते थे ।
- मन्दिरो के साक्ष्य नहीं मिलते ।
- अग्निकुण्ड प्राप्त होते हैं ।
- मातृदेवियों की मूर्तियाँ मिलती हैं ।
- पशुपतिनाथ की मोहर प्राप्त होती हैं । इस मोहर पर बाघ, हाथी, बैल, गैंडा व हिरण के चित्र मिलते हैं सर जॉन मार्शल ने सर्वप्रथम इसे पशुपतिनाथ कहा था ।
- आत्मा की अमरता मे विश्वास रखते थे ।
- हडप्पा से स्वास्तिक का चिह्न प्राप्त होता है ।
- लिंगपूजा, यौनिपूजा, वृक्ष पूजा मे विश्वास रखते थे ।
- बलि प्रथा का अनुमान भी – जैसे – चन्हूदडों की मुहर पर बलि के दृश्य
- वृक्ष, पशु, साँप, पक्षी आदि की भी पूजा, सूर्य पूजा
- पुनर्जन्म मे विश्वास – 3 तरह के दाह संस्कार
- हडप्पा से एक मृण्मूर्ति के गर्भ से एक पौधा निकला दिखाया गया है, जो उर्वरता की देवी का प्रतीक है

सामाजिक स्थितिः –
- मातृसत्तात्मक संयुक्त परिवार होते थे ।
- समाज संभवतः 4 भागों मे विभाजित था –
  (i) पुरोहित वर्ग
  (ii) व्यापारी वर्ग
  (iii) किसान वर्ग
  (iv) श्रमिक वर्ग
- बडी मात्रा मे मातृदेवियों की मूर्ति मिलती है ।
- यह शान्तिप्रिय लोग थे क्योंकि अत्यन्त कम मात्रा मे हथियार मिलते हैं ।
- पुरूष एवं महिलाएँ शृंगार करते थे एवं जवाहरात पहनते थे ।
- लोग शाकाहारी व माँसाहारी थे ।
- शतरंज एवं मुर्गे की लडाई इनके प्रिय खेल थे ।
- अन्तिम संस्कार की तीनों विधियों का प्रचलन था –
  (i) पूर्ण शवाधान
  (ii) आंशिक शवाधान
  (iii) दाह संस्कार
- यह आत्मा व पुनर्जन्म मे विश्वास करते थे ।

- लोथल से 3 व कालीबंगा से एक युग्मित शवाधान मिलता है ।

आर्थिक स्थिति/व्यापारः -

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी ।
- अधिशेष उत्पादन होता था जिन्हे बडे बाजारों/शहरों मे बेचा जाता था ।
- गेहूँ, सरसों, चना, मटर, रागी प्रमुख फसलें थी ।
- इन्हें चावल एवं बाजरे का ज्ञान नहीं था ।
- लोथल से चावल के साक्ष्य मिलते हैं ।
- रंगपुर से चावल की भूसी मिलती है ।
- रंगपुर उत्तर हडप्पा स्थल है ।
- शोर्तुगई (अफगानिस्तान)Oxus River के किनारे से नहरों के साक्ष्य मिलते हैं ।
- धौलावीरा से जलाशय के साक्ष्य मिलते हैं ।
- यह पशुपालन भी करते थे ।
- गाय, भैंस, भेड, बकरी, खरगोश, कुत्ता एवं बिल्ली इनके प्रिय पशु थे ।
- यह ऊँट, घोडा, हाथी से परिचित नहीं थे ।
- विदेशी व्यापार होता था ।
- सारगोन अभिलेख मे सिन्धु घाटी सभ्यता को "मेलुहा" कहा गया है ।
- मेलुहा हाजा (मोर) पक्षी के लिए प्रसिद्ध है ।
- सारगोन अभिलेख में कपास को सिण्डन कहा गया है
- कपास की विश्व मे प्रथम खेती भारत में हुई ।
- दिलमून (बहरीन) व आखन (ओमान) मध्यस्थ का कार्य करते थे ।
- मुद्रा व्यवस्था का प्रचलन नहीं था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- यह सोने व चाँदी का प्रयोग करते थे ।
- लोहे से परिचित नहीं थे ।
- ताँबा + टिन = कांस्य
- बालाकोट (PAK) से शंख उद्योग के अवशेष मिलते हैं ।
- माप की दशमलव प्रणाली
- भारत को नाविकों का देश कहा

मूर्तियों एवं मुहरेः -

- यहाँ से 3 तरह की मूर्तियाँ मिलती हैं -
  1. धातु की
  2. पत्थर की
  3. मिट्टी की (टेराकोटा)
- मोहनजोदडो से नर्तकी की मूर्ति (धातु की)
- दैमाबाद से धातु का रथ
- मोहनजोदडों से पत्थर की पुरोहित राजा की मूर्ति
- टेराकोटा की मातृदेवियों की मूर्तियाँ
- ज्यादातर मुहरें शैलखडी की बनी हुई हैं ।
- ज्यादातर मुहरें चौकोर हुआ करती थी ।
- मुहरे वस्तुओं की गुणवत्ता एवं व्यक्ति की पहचान की द्योतक होती थी ।
- (I) मुहरों पर एकसिंगा (एकशृंगी - सबसे ज्यादा)
- मोहनजोदडों व हडप्पा से बडी मात्रा में मुहरें प्राप्त होती हैं ।
- (II) कूबड वाला सांड के चित्र

1. हडप्पाः -

पाकिस्तान के पंजाब के मोंटगोमरी जिले मे स्थित (अब - शाहीवाल जिले मे) रावी नदी के तट पर

- उत्खननकर्ता - दयाराम साहनी
- रावी नदी के तट पर श्रमिको के आवास एवं अन्नागार मिलते हैं ।
- R – 37 नामक कब्रिस्तान मिलता है । एक शव को ताबूत मे दफनाया गया है, इसे विदेशी की कब्र कहते हैं ।
- यहाँ से इक्का गाडी प्राप्त होती है । (पश्चिम मे विशाल दुर्ग)
- शृंगार पेटी प्राप्त होती है ।
- टीले पर निर्मित - व्हीलर ने "माउण्ट A – B" कहा ।

2. मोहनजोदडो : -

स्थिति = लरकाना (सिन्ध, PAK)
सिन्धु नदी के तट पर
उत्खननकर्ता = राखालदास बनर्जी
मोहनजोदडो का शाब्दिक अर्थ = मृतकों का टीला (सिन्धी भाषा)

(i) विशाल स्नानागार -

(a) आकार :- 39×23×8 ft
(b) इसके उत्तर व दक्षिण मे सीढियाँ बनी हुई हैं
(c) इसमें बिटुमिनस का लेप किया गया है ।
(d) इसके उत्तर दिशा मे 6 वस्त्र बदलने के कक्ष हैं ।
(e) तीन तरफ बरामदे हैं ।
(f) बरामदे के पीछे कई कक्ष बने हुए हैं ।
(g) जलापूर्ति हेतु कुँआ भी बना हुआ है ।
(h) सीढियों के साक्ष्य भी मिलते हैं ।
(i) प्रथम तल पर सम्भवतया पुरोहित रहते होंगे ।
(j) सम्भवतया यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता रहा होगा ?

(k) सर जॉन मार्शल ने इसे तात्कालिक समय की आश्चर्यजनक इमारत कहा है ।

(ii) विशाल अन्नागार
(iii) महाविद्यालय के साक्ष्य
(iv) सूती कपडे के साक्ष्य
(V) हाथी का कपालखण्ड
(vi) नर्तकी की मूर्ति जो धातु की बनी हुई है ।
  (a) यह नग्न है ।
  (b) इसने एक हाथ मे चूडियाँ पहन रखी है ।
(vii) पुरोहित राजा की मूर्ति जो ध्यान की अवस्था में है
  (a) इसने शॉल ओढ रखी है जिस पर कशीदाकारी का कार्य किया गया है ।
(viii) यहाँ से मेसोपोटामिया की मुहर मिलती है ।

3. <u>लोथल :-</u>
स्थिति = गुजरात
- भोगवा नदी के किनारे
  उत्खननकर्ता = S. R. राव (रंगनाथ राव)
  → यह एक व्यापारिक नगर था ।
  (i) यहाँ से गोदीवाडा (Dockyard) मिलता है
    (a) यह सिन्धु घाटी सभ्यता की सबसे बडी कृति है ।
  (ii) मनके (Bead) बनाने का कारखाना
  (iii) चावल के साक्ष्य
  (iv) फारस की मुहर जो गोलाकार बटननुमा है
  (v) घोडे की मृण्मूर्तियाँ
  (vi) चक्की के दो पाट
  (vii) घरों के दरवाजे मुख्य मार्ग पर खुलते है (एकमात्र)
  (viii) छोटे दिशा सूचक यंत्र

4. <u>सुरकोटडा / सुरकोटदा</u>: -
स्थिति = गुजरात
  (i) घोडे की हड्डियाँ
- सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगो को घोडे का ज्ञान नहीं था ।

5. <u>कुनाल (**HR**)</u>
- चाँदी के दो मुकुट

6. <u>रोजदी (गुजरात)</u>
- हाथी के साक्ष्य

7. <u>रोपड (**PB**)</u>
मनुष्य के साथ कुत्ते को दफनाने के साक्ष्य

8. <u>धौलावीरा</u>
गुजरात - कच्छ जिला (किसी नदी तट पर नहीं)
उत्खननकर्त्ता - रविन्द्र सिंह विष्ट (1990 में)
- यह सबसे नवीन नगर है जिसका उत्खनन किया गया ।
- कृत्रिम जलाशय के साक्ष्य । संभवतः नहरों के माध्यम से खेती करते होंगे । (दुर्गाभाग, मध्यम नगर, निचला)
- यह नगर 3 भागों में बंटा हुआ था ।
- स्टेडियम एवं सूचना पट्ट के अवशेष मिलते है । (खेल का मैदान)
- सिंधु लिपि के 10 बडे चिह्नों से निर्मित शिलालेख

9. <u>चन्हुदडों</u>
उत्खननकर्त्ता - एन. मजूमदार (डाकूओं ने हत्या कर दी) - अर्नेस्ट मैके
- मनके बनाने के कारखाने (मणिकारी), मुहर बनाने का काम आदि ।
- औद्योगिक नगर
- कुत्ते द्वारा बिल्ली का पीछा करने के साक्ष्य मिले ।
- वक्राकार ईंटे मिली है ।

10. <u>दैमाबाद</u>
- रथ मिले है ।

<u>हडप्पा लिपि</u>
- लगभग 64 मूल चिह्न व 400 तक अक्षर
- इन्हें लिपि का ज्ञान था
- दायीं से बायीं ओर लिखते थे ।
- गोमूत्राक्षर लिपि एवं भाव-चित्रात्मक लिपि थी ।
- 375 से 400 तक भाव एवं शब्दों का प्रयोग करते थे ।
- एक लेख पर सर्वाधिक 16 शब्द व भावों का प्रयोग किया गया है ।
- मछली का प्रयोग Max तथा "U" आकार भी अधिक

पतन के कारण

- गार्डन चाइल्ड तथा व्हीलर के अनुसार आर्यो का आक्रमण
- रंगनाथ राव तथा सर जॉन मार्शल – बाढ
- लोम्बिरिक-सिंधु नदी का मार्ग बदलता
- आरस्टाईन एवं अमलानंद घोष-जलवायु परिवर्तन
- जॉन मार्शल-प्रशासनिक शिथिलता

निष्कर्ष

हडप्पा या सिंधुघाटी सभ्यता एक विशाल व विस्तृत सभ्यता थी, अतः इसके पतन के लिए कोई एक कारण उत्तरदायी नहीं हो सकता है ।

प्राचीन अवशेषों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि अपने अंतिम समय में यह पतनोन्मुख रहीं । अंततः द्वितीय सहस्त्राब्दी ई.पू. के मध्य इस सभ्यता का पूर्णतः विनाश हो गया । इस सभ्यता का क्रमिक पतन हुआ तथा यह नगरीय सभ्यता से ग्रामीण सभ्यता में पहुंच गयी ।

2. वैदिक काल (साहित्य)

1500 – 600 BC

1. वेद ⇒ श्रुति
2. ब्राह्मण ⇒
3. आरण्यक ⇒
4. उपनिषद ⇒ वेदान्त

} वैदिक साहित्य

(1) वेदांग
(2) धर्मशास्त्र
(3) महाकाव्य
(4) पुराण
(5) स्मृतियाँ

} वैदिक साहित्य का अंग नहीं है ।

वेद –

- वेद का शाब्दिक अर्थ ज्ञान होता है ।
- वेदों का संकलन कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने किया ।
- वेदों की रचना आर्यो ने की ।
- आर्य का शाब्दिक अर्थ = श्रेष्ठ/कुलीन
- वेदों का नित्य, प्रामाणिक एवं अपौरूषेय माना जाता है
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाले ब्राह्मणों को दृष्टा कहते है ।
- वैदिक मन्त्रों की रचना करने वाली महिलाओं को ऋषि कहा जाता था ।
- वेद 4 है –

1. ऋग्वेद –

- ➢ ऋग्वेद में 10 मण्डल, 1028 सूक्त, 10580(10600) मन्त्र है ।
- ➢ पहला एवं 10वाँ मण्डल बाद में जोडे गए है ।
- ➢ दूसरे से लेकर सातवें मण्डल को वंश मण्डल /परिवार मण्डल कहा जाता है ।
- ➢ तीसरे मण्डल मे गायत्री मन्त्र का उल्लेख मिलता है ।
  - ○ गायत्री मंत्र की रचना विश्वामित्र ने की ।
  - ○ गायत्री मंत्र सवितृ / सावितृ (सूर्य) को समर्पित है ।
- ➢ सातवें मण्डल मे दशराज्ञ/ दशराजन युद्ध का उल्लेख मिलता है ।

  भरत कबीला V/S 10 कबीले
  राजा = सुदास
  पुरोहित = वशिष्ठ पुरोहित = विश्वामित्र
- ➢ यह युद्ध रावी नदी के जल के लिए लडा गया था ।

- आठवें मण्डल में घोसा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति, लोपामुद्रा जैसी ऋषि महिलाओं के नाम मिलते है ।
- 9वां मण्डल सोम को समर्पित है ।
- सोम भुजवन्त पर्वत से मिलता है ।
- 10वें मण्डल के पुरूष सूक्त में शूद्र शब्द का उल्लेख / चारों वर्ण का उल्लेख मिलता है ।
- 10वें मण्डल के नासदीय सूक्त में निर्गुण भक्ति का उल्लेख मिलता है ।
- ऋग्वेद के मन्त्रों को उच्चारण करने वाला ब्राह्मण = होतृ
- उपवेद = आयुर्वेद

2. यजुर्वेद :-

- यह 2 भागों में है – (i) शुक्ल यजुर्वेद
  (ii) कृष्ण यजुर्वेद
- यह गद्य एवं पद्य दोनों में है ।
- इसमें शून्य का उल्लेख मिलता है ।
- मंत्र पढने वाले को “अध्वर्यु” कहा जाता है ।

- यज्ञ – अनुष्ठानों की जानकारी मिलती है ।
- उपवेद – धनुर्वेद

3. सामवेद : –
- संगीत का प्राचीनतम स्रोत
- वैदिक मन्त्रों के उच्चारण को बताया गया है जो उच्च स्वर में गाए जाते हैं ।
- भगवान कृष्ण का प्रिय वेद
- मन्त्रों का उच्चारण करने वाला = उद्गाता
- उपवेद = गन्धर्ववेद

4. अथर्ववेद :-
- अथर्व ऋषि तथा आंगीरस ऋषि – रचयिता
- अन्य नाम – अथर्वआंगीरस वेद
- इसमें काले जादू, टोने – टोटको व चिकित्सा का उल्लेख ।
- चाँदी का उल्लेख
- विविध विषय – औषधि प्रयोग, शत्रुओं का दमन, रोग निवारण, तंत्र – मंत्र आदि ।
- मंत्रो का उच्चारण करने वाला – ब्रह्म
- उपवेद – शिल्पवेद ।

ब्राह्मण साहित्य

ऋग्वेद – 1. ऐतरेय ब्राह्मण
2. कोषीतकी (Raj. Board में इसे यजुर्वेद का ब्राह्मण)

यजुर्वेद – 1. शतपथ ब्राह्मण
2. तेतरेय ब्राह्मण

सामवेद – 1. पंचवीश ब्राह्मण
2. षडवीश ब्राह्मण
3. जैमिनीय ब्राह्मण

अथर्ववेद 1. गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य –
- वनों में रचना हुई
- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप (ज्ञान) में लिखे गये ।
- ज्ञान मार्ग प्रमुख

उपनिषद् साहित्य –
- इनकी संख्या 108 है ।
- इसे वेदान्त भी कहा जाता है ।
- उपनिषद् का शाब्दिक अर्थ गुरू के समीप निष्ठापूर्वक बैठना है ।
- विषयवस्तु – रहस्यात्मक ज्ञान व दार्शनिक तत्व

प्रमुख उपनिषद् –
1. कठोपनिषद् = कठ + उपनिषद् → इसमें यम व नचिकेता का संवाद है
इसमे कर्मकाण्ड की आलोचना की गई है ।

2. छान्दोग्य उपनिषद् –
   - इसमें भगवान कृष्ण का प्राचीनतम उल्लेख मिलता है ।
   - भगवान श्रीकृष्ण को देवकी का पुत्र तथा अंगीरस ऋषि का शिष्य बताया है ।
   - बौद्ध धर्म का पंचशील सिद्धान्त इसमें मिलता है ।

3. वृहदारण्यक उपनिषद् –
   - सबसे लम्बा उपनिषद्
   - इसमें गार्गी व याज्ञवल्क्य का संवाद मिलता है ।

4. जाबाल उपनिषद् –
   - चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है ।

5. ऐतरेय उपनिषद् –
बौद्ध धर्म का अष्टांगिक मार्ग

6. मुण्डकोपनिषद् –
"सत्यमेव जयते"

वेद — कर्म मार्ग – जेमिनि पूर्व मीमांसा दर्शन
ब्राह्मण — प्रभाकर व कुमारिल भट्ट

आरण्यक — ज्ञान मार्ग – बादरायण – उत्तर मीमांसा दर्शन
उपनिषद् ब्रह्मसूत्र
- शंकराचार्य – अद्वैत
- रामानुज – विशिष्ट अद्वैत
- निर्म्बाकाचार्य – द्वैत – अद्वैत
- वल्लभाचार्य – शुद्ध अद्वैत
- माध्वाचार्य – द्वैत

वेदांग

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. व्याकरण
4. छन्द
5. निरूक्त
6. कल्प

शुल्वसुत्र

- इसमें यज्ञ वेदिकाओं को नापने का उल्लेख
- गणित व रेखागणित का प्रथम ग्रन्थ

पुराण – संख्या – 18
ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रश्रवा ने संकलित किया ।

- मत्स्य पुराण – सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक इसमें सातवाहन शासकों का उल्लेख, शुंगवंश का उल्लेख
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण – गुप्त वंश का उल्लेख
- मार्कण्डेय पुराण – देवी महात्मय – (इसका भाग दुर्गासप्तशती) महामृत्युंजय मंत्र

स्मृति साहित्यः –

मनुस्मृतिः – प्राचीनतम स्मृति

- इसमें सामाजिक नियमों का उल्लेख किया गया है ।
- जर्मन दार्शनिक नीत्शे कहता है ।"बाइबिल को जला दो, मनुस्मृति को अपनाओ"
- शुंग व सातवाहन वंश के समय इसकी रचना हुई
  टीकाकार = भारूची
  कुल्लक भट्ट
  मेधातिथी
  गोविन्दराज
  याज्ञवल्क्य स्मृतिः – टीकाकार = विश्वरूप
  विज्ञानेश्वर
  अपरार्क

नारदस्मृतिः – इसमें दासों की मुक्ति का उल्लेख किया गया है ।
कात्यायनः – इसमें आर्थिक गतिविधियों का उल्लेख है ।

ऋग्वैदिक काल	उत्तरवैदिक काल
(1500 – 1000BC)	(1000 – 600BC)

3. ऋग्वैदिक काल (1500 – 1000 BC)

- आर्य का शाब्दिक अर्थ – भद्रजन, श्रेष्ठ, उत्तम, कुलीन
- आर्यो का निवास स्थान –

(i) बाल गंगाधर तिलक – "आर्कटिक होम ऑफ वेदाज" / "गीता रहस्य" / आरियॉन / ओरॉयन ← पुस्तके

इस पुस्तक मे उत्तरी ध्रुव को आर्यो का निवास स्थान बताया ।
(ii) दयानन्द सरस्वती – तिब्बत को आर्यो का स्थान बताया ।
(iii) डॉ. पेन्का – जर्मनी को बताया ।
(iv) मेक्स म्युलर – मध्य एशिया – बैक्ट्रिया
सर्वाधिक मान्य मत

आर्यो का भौगोलिक विस्तार :-

- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है ।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी । (देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा)
- गंगा व सरयू का उल्लेख 1 – 1 बार "मुजवन्त"
- यमुना का उल्लेख 3 बार
- "भुजवन्त" नामक पहाडी चोटी का उल्लेख – जो कि हिमालय है ।
- सोम का निवास स्थान – भुजवन्त
- पंजाब की नदियों का उल्लेख मिलता है ।
  झेलम – वितस्ता, चिनाब – अस्किनी, सतलज सतुद्री, व्यास – बिपाशा, रावी – पुरूषणी
- अफगानिस्तान की नदियों का उल्लेख

आर्यो की राजनैतिक स्थिति :-

- राजा का पद वंशानुगत नहीं होता था ।
- राजा को गोप / जनस्य गोप कहा जाता था ।
- राजा का पद गरिमामयी नहीं होता था ।
- कालान्तर (ऋग्वैदिक काल का अन्तिम समय) में गोप का पद वंशानुगत हो गया था ।
- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- अधिकतर लडाईयाँ जानवरों (गायों व घोडा) के लिए लडी जाती थी ।
- राजा की सहायता हेतु कुछ संस्थाएँ होती थी –

(1) विदथ –
- प्राचीनतम संस्था
- यह धन का बँटवारा करती थी (लूट)

(2) सभा –
- वरिष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह
- ऋग्वेद मे 8 बार इसका उल्लेख किया गया है ।

(3) समिति –
- जनप्रतिनिधियों का समूह
- ऋग्वेद में 9 बार इसका उल्लेख किया है ।
- स्पश = गुप्तचर
- राजा की सहायता हेतु 12 मन्त्री होते थे जिन्हे रत्निन (रत्नि) कहा जाता था ।
- व्राजपतिः – गोचर भूमि का प्रमुख
- बलिः – राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर
- राजनैतिक इकाईयाँ –
  (1) जन – गोप
  (2) विश – विशपति
  (3) ग्राम – ग्रामणी
  (4) कुल – कुलुप
- महिलाएँ भी सभा मे हिस्सा लेती थी ।

आर्थिक जीवन –
- आय का स्त्रोत/ प्रमुख पेशा – पशुपालन
- गाय व घोडा – प्रिय पशु
- कृषि (स्थायी कृषि) नहीं करते थे । ऋग्वेद मे कृषि का उल्लेख 3 बार मिलता है ।
- मुद्रा प्रणाली नहीं । वस्तु विनिमय के माध्यम से व्यापार
- मुद्रा के रूप मे गाय व निस्क का प्रयोग । (प्रारम्भ मे आभूषण)
- अयस शब्द – संभवतः ताँबे या काँसे के लिए / लोहे से परिचित नहीं
- कपास का उल्लेख नहीं

सामाजिक जीवन
- पितृसतात्मक संयुक्त परिवार
- समाज 3 वर्णो मे विभक्त – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- शुद्रो का अस्तित्व नहीं था ।
- ऋग्वेद के 10वें मण्डल मे पुरूष सूक्त में क्षुद्र शब्द का उल्लेख । लेकिन यह बाद में जोडा गया था ।
- वर्ण व्यवस्था – कर्म आधारित अर्थात् व्यक्ति वर्ण बदल सकता था ।
- महिलाओं को सभा व समिति मे हिस्सा लेने का अधिकार था ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था ।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रों का रचना भी की थी ।
- कुछ विदुषी महिलाओं की जानकारी
  लोपामुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला, विश्वरा, काक्षावृति
- "विषफला" नामक योद्धा महिला का उल्लेख ।
- जो महिलाएँ अविवाहित होकर अध्ययन करती थी, उन्हे "अमाजु" कहा जाता था ।
- बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन ।
- विधवा विवाह होता था ।
- सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था ।
- "नियोग प्रथा" का प्रचलन था ।
- दहेज को "वहतु" कहते थे ।
- घरेलु दास होते थे ।
- विराट पुरूष के मुख से ब्राह्मण, क्षत्रिय भुजाओ से, वैश्य जाँघो से एवं शुद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं ।
- आर्यो के वस्त्र सूत, ऊन एवं चर्म के बने होते हैं ।
- भिषज शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में वैद्य के लिए होता था ।

धार्मिक जीवन :-
- आर्य बहुदेववाद मे आस्था रखते थे । सर्वेश्वरवाद में भी आस्था रखते थे ।
- मूर्तिपूजा नहीं करते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नहीं मिलते है ।
- सबसे प्रमुख देवता – इन्द्र
  ऋग्वेद मे 250 बार 'इन्द्र' का उल्लेख है । इन्द्र को "पुरन्दर" कहा ।
- 'अग्नि' दूसरा प्रमुख माना जाता था ।
- अग्नि को मध्यस्थ माना जाता था ।
- वरूण – तीसरा प्रमुख देवता । वरूण को 'ऋत' का संरक्षक माना जाता है ।
  ऋत – इस जगत् की भौतिक, नैतिक एवं कर्मकाण्डीय व्यवस्था को ऋत कहा गया है ।
- पुषन – पशुओं के देवता को कहा जाता था । (पूषण)
- यज्ञ अनुष्ठान होते थे ।

- धार्मिक कर्मकाण्डो का उद्देश्य भौतिक सुखों (पुत्र/पशु) की प्राप्ति करना था ।
- गायत्री मंत्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल में उल्लेख
- सोम का पेय पदार्थ को देवता माना । ऋग्वेद के 9वें मण्डल में ।

प्रा. बहुदेववाद
↓
बहुदेववाद
↓
एकेश्वरवाद
↓
सर्वेश्वरवाद (अद्वैतवाद)

हीनोथिज्म - किसी स्थान विशेष पर विशेष समय एवं परिस्थितियों के कोई एक देवता प्रमुख एवं अन्य देवी-देवता गौण हो जाते हैं ।
↓
मैक्समूलर

4. उत्तरवैदिक काल – 1000 – 600 BC

- महत्त्वपूर्ण स्त्रोत – यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद् व आरण्यक
- आर्य संस्कृति के प्रसार और विकास, उत्कर्ष, विभिन्नीकरण का युग
- लौह प्रौद्योगिकी युग की शुरूआत । ("चित्रित धूसर मृदभाण्ड")

राजनैतिक जीवन – राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था :-

- क्षेत्रगत साम्राज्यों का उदय प्रारम्भ ।
- राजा का पद पहले की अपेक्षा अधिक गौरवशाली हो गया था ।
- राजा का पद वंशानुगत हो गया था ।
- ऐतरेय ब्राह्मण मे राजा की विभिन्न उपाधियों का वर्णन मिलता है ।
  स्वराट, विराट, एकराट, सम्राट
- राजा की सहायता हेतु 12 रत्निन् होते थे ।
- राजा यज्ञों का आयोजन करवाता था ।

(i) अश्वमेध यज्ञ – यह साम्राज्यवादी यज्ञ होता था । 3 दिन तक होता

(ii) राजसूय यज्ञ – राज्याभिषेक के समय किया जाता था । इस दिन राजा हल चलाता था । अपने रत्निनों का निमंत्रण स्वीकार कर, उनके घर भोजन करने जाता था ।

(iii) वाजपेयी यज्ञ – रथ दौड का आयोजन करवाते थे । राजा हिस्सा लेता था व हमेशा जीतता था ।

- राजा के पास स्थायी सेना नहीं होती थी ।
- ऋग्वैदिक काल मे राजा को दिया जाने वाला स्वैच्छिक कर, अब अनिवार्य हो गया, जिसे 'बली' कहा जाता था ।(1/16वाँ भाग)
- विदथ का उल्लेख नहीं मिलता ।
- सभा, एवं समिति का प्रभाव कम हो गया था ।
- अथर्ववेद – सभा व समिति को प्रजापति की पुत्रियाँ कहा गया है ।
- पांचाल – कबीला – प्रदेश – सर्वाधिक विकसित राज्य
- राजा की "दैवीय उत्पति का सिद्धान्त" सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण मे मिलता है ।

आर्थिक जीवन :-

- कृषि का विकास हो चुका था ।
- अथर्ववेद मे "पृथवेन्यु" को कृषि धरती पर लाने का श्रेय जाता है ।
- अथर्ववेद मे टिड्डियों का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण में कृषि के सभी प्रकारों (जुताई,बुआई,कटाई) का उल्लेख मिलता है ।
- शतपथ ब्राह्मण की काठक संहिता मे (24 बैलों द्वारा खिंचे जाने वाले) हल का वर्णन मिलता है ।
- गेहूँ एवं जौ प्रमुख फसले थी ।
- पशुपालन भी होता था ।
- वस्तु विनिमय होता था ।
- विनिमय मे गाय व निस्क का प्रयोग होता था । निस्क – सोने का आभूषण जो गले मे पहनते थे ।
- अधिशेष उत्पादन होने लगा ।(लौहा – खेत)
- अन उत्पादक वर्ग – ब्राह्मण व क्षत्रिय

उत्पादक वर्ग – वैश्य व शुद्र :-

- अधिशेष उत्पादन पर अधिकार को लेकर ब्राह्मणों व क्षत्रियों मे संघर्ष हुआ । अंततः ब्राह्मणों को प्रतीकात्मक श्रेष्ठता प्रदान की गयी एवं अधिशेष उत्पादन पर क्षत्रियों का अधिकार हो गया ।
- कृषि मे लौह निर्मित उपकरणों का प्रयोग (अन्तरजीखेडा से साक्ष्य)

- समुद्र का ज्ञान हो गया था । साहित्य मे पश्चिमी तथा पूर्वी दोनो प्रकार के समुद्रों को वर्णन मिलता है ।व्यापार व वाणिज्य का संकेत
- स्वर्ण व लौहे के अलावा टिन, तांबा, चांदी व सीसा से भी परिचित हो गये थे ।
- वस्त्र निर्माण और धातु शिल्प (धातु गलाने का काम) उद्योग बडे पैमाने पर ।

सामाजिक जीवन :-

- पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार
- चार वर्णो मे समाज विभक्त हो गया था । किन्तु अस्पृश्यता का अभाव था ।
- ब्राह्मणों को 'अदायी' कहा जाता था ।
  आरम्भ के 3 वर्ग द्विज कहलाते थे ।
  (जनेऊ धारण करते हैं) उपनयन संस्कार होता था ।
  द्विज - दो बार जन्म लेने वाला
- क्षुद्रो को उपनयन संस्कार का अधिकार नहीं था ।
- महिलाओं की स्थिति मे गिरावट आयी ।
  (वृहदारण्य उपनिषद मे याज्ञवल्कय एवं गार्गी का संवाद मिलता है ।)
- अथर्ववेद मे पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है ।
- ऐतरेय ब्राह्मण में भी पुत्री जन्म को दुःखदायी बताया है । (पुत्री - कृपण कहा)
- मैत्रायणी संहिता मे भी पुत्री को शराब एवं जुआ की तरह बुराई बताया है ।
- महिलाओ को शिक्षा का अधिकार था । EX – गार्गी, मैत्रेयी, वेदवती
- महिलाओ को सम्पत्ति का अधिकार था ।
- विधवा विवाह का प्रचलन था हालाँकि समाज मे इसे बुरा माना जाने लगा था ।
- नियोग प्रथा का प्रचलन भी ।
- सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था ।
- घरेलू दासों का प्रयोग होता था ।
- जाबालोपनिषद् में चारों आश्रमों का विवरण मिलता है ।

धार्मिक स्थिति

- बहुदेववाद का प्रचलन था । सर्वेश्वर वाद मे भी विश्वास रखते थे ।
- मन्दिरों के साक्ष्य नही
- यज्ञ अनुष्ठान अत्यधिक जटिल हो गये थे केवल विद्वान ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही यज्ञ कर सकते थे ।
- प्रमुख देवता - ब्रह्मा, विष्णु, महेश ।

पाँच प्रकार के यज्ञ होते थे (पंचयज्ञ)।
(i) ब्रह्म यज्ञ
(ii) देव यज्ञ
(iii) अतिथि यज्ञ
(iv) पितृ यज्ञ
(v) भूत यज्ञ

- ब्रह्म यज्ञ को ''ऋषि यज्ञ'', अतिथि यज्ञ को ''मनुष्य यज्ञ'' भी कहते थे । (भूत यज्ञ - प्राणी जगत् व प्रकृति के प्रति कृतज्ञता)

3 ऋण -
(i) ऋषि ऋण
(ii) देव ऋण
(iii) पितृ ऋण

- ब्राह्मणों के एक वर्ग ने इस जटिल कर्मकाण्डिय व्यवस्था का विरोध - किया एवं ज्ञान पर विशेष बल दिया ।

भौगोलिक स्थिति

- गंगा - यमुना दोआब मे आर्य संस्कृति का प्रसार हुआ
- शतपथ ब्राह्मण - राजा विदेथ माधव ने पुरोहित गौतम राहुगुणा को साथ लिया एवं सदानिरा नदी तक के सभी जंगलो को (मुँह मे अग्नि धारण की) जला दिया अनार्य शासक (मगध का) को ''व्रात्य'' कहा गया है इसका शुद्धिकरण करके इसको आर्य बनाया गया है
- भुजवंत के अतिरिक्त 3 अन्य पर्वतमालाओ का उल्लेख मिलता है ।

5. बौद्ध धर्म

संस्थापक - गौतम बुद्ध
जन्म - 563 B. C.
पिता - शुद्धोधन
माता - महामाया
मौसी - प्रजापति गौतमी
पत्नी - यशोधरा
पुत्र - राहुल
जन्मस्थान - लुम्बिनी (कपिलवस्तु)
आधुनिक - रुम्मिन देई, नेपाल
वंश - इक्ष्वाकु
शाक्य क्षत्रिय
गौत्र - गौतम

- कौण्डिनय ब्राह्मण ने भविष्यवाणी की कि सिद्धार्थ बडा होकर चक्रवर्ती सम्राट या साधु बनेगा ।

- 4 घटनाएँ जिन्होने बुद्ध का जीवन बदल दिया –
  (i) वृद्ध व्यक्ति
  (ii) बीमार व्यक्ति
  (iii) मृत व्यक्ति
  (iv) सन्यासी
- 29 वर्ष की अवस्था मे गृहत्याग किया यह घटना -- ''महाभिनिष्क्रमण'' कहलाती है ।
- 'आलार कलाम' के आश्रम मे रहकर सांख्य दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया ।
- ''रामपुत्र' – दूसरे गुरू । (रूद्रक रामपुत्र)
- कौडिन्य आदि ब्राह्मणों के साथ कठिन तपस्या की ।
- ''सुजाता'' नामक लडकी ने बुद्ध को खीर खिलाई ।
- बुद्ध ने ''मध्यम मार्ग'' का प्रतिपादन किया ।
- बुद्ध उरूवेला चले गये एवं वहाँ निरंजना नदी के तट पर पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- अब सिद्धार्थ ''गौतम बुद्ध व शाक्य मुनि'' के नाम से प्रसिद्ध हुये ।
- सारनाथ में कौडिन्य एवं अन्य ब्राह्मणों को पहला उपदेश दिया इसे ''धर्मचक्र प्रवर्तन'' कहते है
- सर्वाधिक उपदेश – श्रावस्ती मे दिये ।
- आनन्द प्रिय शिष्य तथा उपालि प्रमुख शिष्य था ।
- आनन्द के कहने पर भगवान बुद्ध ने महिलाओं को संघ मे प्रवेश दिया । प्रजापति गौतमी – पहली 'भिक्षुणी'
- 483 B.C. मे बुद्ध की मृत्यु – खुशीनारा में (कुशीनारा) कुशीनगर
- भगवान बुद्ध के प्रतीक –
  1. हाथी/ सफेद हाथी – भगवान बुद्ध के गर्भस्थ होने का प्रतीक
  2. सांड/कमल – जन्म
  3. घोडा – गृहत्याग का प्रतीक
  4. बोधिवृक्ष/पीपल – ज्ञान का प्रतीक
  5. पद्चिन्ह – निर्वाण का प्रतीक
  6. स्तूप – मृत्यु का प्रतीक
  7. महाभिनिष्क्रमण – 29 वर्ष की अवस्था में भगवान बुद्ध ने गृहत्याग किया
  8. सम्बोधि – 35 वर्ष की अवस्था मे गौतम बुद्ध को बोधगया मे निरंजना नदी के तट पर पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई ।

ज्ञान/ दर्शन –

4 आर्य सत्य

(i) दुःख है ।
(ii) दुःख का कारण है । (प्रतीत्य समुत्पाद)
(iii) दुःख निवारण है ।
(iv) दुःख निवारण का मार्ग है ।

➢ **अष्टांगिक मार्ग –**

सम्यक् दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति, सम्यक् समाधि

➢ **कार्य कारण/ कारणता सिद्धान्त – प्रतीत्य समुत्पाद :–**

(ऐसा होने पर –वैसा होना)

- दुःखो का कारण अविद्या को बताया है ।
- कर्म सिद्धान्त मे विश्वास रखते हैं ।
- पुनर्जन्म मे विश्वास रखते है ।
- अनात्मवादी होते हैं । आत्म की अमरता में विश्वास नहीं रखते है ।
- आत्मचेतना पर सर्वाधिक बल
- अनीश्वरवादी होते है । ईश्वर के प्रश्न पर बुद्ध मुस्करा देते थे ।
- क्षणिकवाद (अनित्यवादी) – इस जगत की सभी वस्तुऐं अनित्य एवं परिवर्तनशील हैं ।
- इनका दर्शन – क्षणिकवाद (अनित्यवादी)
- आम्रपाली (वैशाली) भी बौद्ध संघ मे सम्मिलित हो गयी थी ।

अनात्मवाद –

- भगवान बुद्ध नित्य आत्मा को स्वीकार नहीं करते ।
- बुद्ध के अनुसार –
  "विज्ञानों (विचार) का प्रवाह ही आत्मा है ।"
- यह विज्ञान अनित्य/क्षणिक होते हैं ।
- प्रत्येक विज्ञान मरने से पूर्व नए विज्ञान को जन्म देता है ।
- विज्ञानों का पुनर्जन्म होता है ।

निर्वाण –

- निर्वाण का शाब्दिक अर्थ "दीपक/विज्ञान का बुझ जाना" होता है ।
- निर्वाण बौद्ध धर्म का अन्तिम लक्ष्य है ।
- भगवान बुद्ध ने निर्वाण की अवस्था का उल्लेख नहीं किया है ।
- भगवान बुद्ध ईश्वर, परमतत्व, निर्वाण जैसे प्रश्नों का उत्तर नहीं देते थे एवं मुस्कुरा दिया करते थे ।
- बौद्ध धर्म अनीश्वरवादी धर्म है ।

- बौद्ध धर्म कर्मफलवादी सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानता है ।
- भगवान बुद्ध अज्ञेयवादी नहीं थे ।

❖ बौद्ध धर्म की चार संगीति –

समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष
1. 483 B.C.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्सप
2. 383 B.C.	वैशाली	कालाशोक	साबकमीर
3. 251 B.C.	पाटलीपुत्र	अशोक	मोग्गलीपुत तिस्स
4. 1st Cent.	कुण्डलवन (कश्मीर)	कनिष्क	अश्वघोष / वसुमित्र

(1) प्रथम संगीति – दो पुस्तके (ग्रन्थ) लिखी गई ।

(i) सुत पिटकः – भगवान बुद्ध का जीवन, उपदेश, शिक्षाएँ, तथा बौद्ध धर्म की जानकारी मिलती है। इसके खुद्दक निकाय में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएँ (जातक) मिलती है ।

(ii) विनय पिटक – संघ के नियम तथा बौद्ध भिक्षुओ के आचार विचार (आचरण) का वर्णन मिलता है

(2) द्वितीय संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त हो गया ।

- स्थविर तथा महासंघिक – दो भागों मे विभक्त ।

(3) तृतीय संगीति – इसमे तीसरे पिटक – अभिधम्म पिटक की रचना की गई । इसमे "बौद्ध धर्म के दर्शन" का वर्णन है

संयुक्त रूप से सुत – विनय – अभिधम्म पिटक को "त्रिपिटक" कहा जाता है ।

(4) चतुर्थ संगीति – बौद्ध धर्म 2 भागों मे विभक्त

हीनयान	महायान
1. रूढीवादी	1. सुधारवादी
2. बुद्ध को महापुरूष मानते है ।	2. भगवान बुद्ध को ईश्वर मानते है ।
3. देवी-देवताओं को नहीं मानते	3. देवी-देवताओं को मानते है । जैसे- प्रजा की देवी – तारा
4. मूर्तिपूजा नहीं करते ।	4. मूर्तिपूजा करते है ।
5. परमपद – अर्हत	5. परमपद – बोधिसत्व
6. व्यक्तिवादी	6. मनवतावादी
7. भाषा – पालि	7. भाषा – संस्कृत
8. श्रीलंका, बर्मा, म्यांमार, थायलैण्ड, कम्बोडिया, लाओस व वियतनाम	8. नेपाल, चीन, कोरिया, जापान

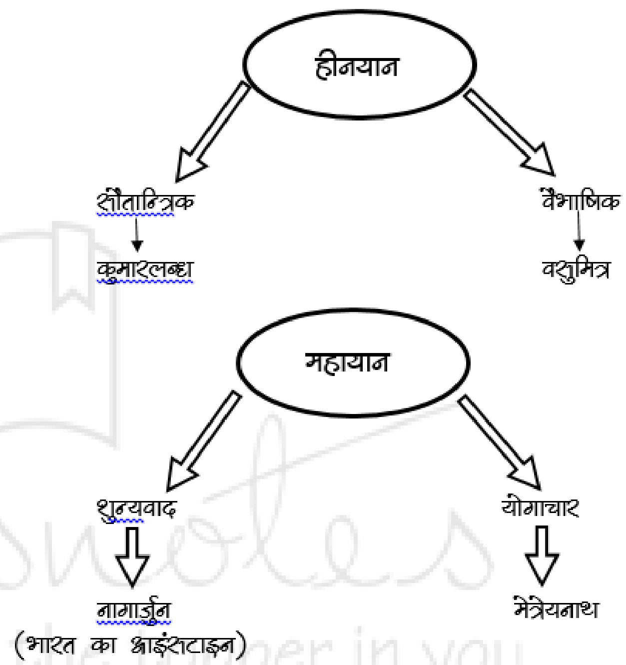

- अन्तिम लक्ष्य – निर्वाण = (अर्थ – बुझ जाना)
- मैत्रेय – भविष्य का बुद्ध

➢ बौद्ध धर्म का योगदानः –

- भगवान बुद्ध ने एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया ।
- भगवान बुद्ध ने धार्मिक आडम्बरो, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वास, सामाजिक असमानता, वर्ण व्यवस्था का विरोध किया ।
- भगवान बुद्ध ने नैतिक नियमों पर अत्यधिक बल दिया ।
  e.g. सत्य, अहिंसा
- बुद्ध ने पंचशील का सिद्धान्त दिया –
  (i) झूठ नही बोलना
  (ii) चोरी नहीं करना
  (iii) हिंसा नही करना

(iv) नशा नहीं करना
(v) व्यभिचार नही करना

- भगवान बुद्ध ने मध्यम मार्ग का प्रतिपादन किया जो अत्यन्त ही व्यवहारिक है ।

स्थापत्य कला मे योगदान –

- बौद्ध धर्म ने स्थापत्य कला मे योगदान दिया ।
- चैत्य (कार्ले, अजन्ता)
- विहार (बोधगया, सारनाथ)
- स्तूप (धमेख, साँची)

मुर्तिकला मे योगदान –

- गान्धार, मथुरा व अमरावती मूर्तिकला शैलियों मे भगवान बुद्ध से सम्बन्धित कई मूर्तियाँ बनी ।

चित्र –

- अजन्ता – ऐलोरा, बाघ आदि की गुफाओं से बौद्ध धर्म सम्बन्धित चित्र मिलते है ।
  - तक्षशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालय विकसित हुए जो शिक्षा के बडे केन्द्र थे ।
  - बौद्ध धर्म की शिक्षा प्राप्त करने हेतु फाह्यान एवं हेन्सांग जैसे विदेशी यात्री भारत आए ।

- उनके यात्रा वृतान्तो से भारत की ऐतिहासिक जानकारी मिलती है ।
  - बौद्ध धर्म के कारण भारतीय संस्कृति का प्रचार – प्रसार विदेशों मे हुआ ।
  - भगवान बुद्ध ने आर्थिक सुधार किए एवं ब्याज का समर्थन किया ।

बौद्ध धर्म के पतन के कारण : –

1. बौद्ध धर्म (संघ) अनेकानेक शाखाओं मे विभाजित हो गया एवं उनमे आपसी फूट पड गई ।
2. बौद्ध संघ धन का केन्द्र बन गए जिससे सन्तों के जीवन मे नैतिक पतन हुआ ।
3. कालान्तर मे बौद्ध धर्म मे कालचक्रयान व वज्रयान जैसी शाखाओं का उद्भव हुआ ।
   यह अतिवादी शाखाएँ थी जो जादू, टोने – टोटके, माँस – मदिरा व मैथुन मे विश्वास करते थे ।
4. बौद्ध धर्म ने हिन्दू कुप्रथाओं को अपना लिया ।
5. ब्राह्मणों ने अपने धर्म में सुधारवादी आन्दोलन चलाया
6. कुमारिल भट्ट एवं शंकराचार्य ने बौद्ध भिक्षुओं को शास्त्रार्थ में पराजित किया ।
7. कालान्तर मे सामन्तों का उदय हुआ । सामन्त अहिंसा जैसी नीतियों को नहीं मानते थे ।
8. राजकीय संरक्षण का अभाव
9. तुर्क आक्रमण
10. तुर्क सेनापति कुतुबुद्दीन खिलजी ने नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को जलाकर नष्ट कर दिया था ।

6. जैन धर्म

- संस्थापक – ऋषभदेव / आदिनाथ दोनों का वर्णन ऋग्वेद मे
- 21वें तीर्थकर – नेमीनाथ
- 22वें तीर्थकर – अरिष्टनेमी – (कृष्ण के समकालीन)
- 23वें तीर्थकर – पार्श्वनाथ
- ऐतिहासिक स्त्रोतों से जानकारी मिलती है ।
- पिता – अश्वसेन
- जन्मस्थान – बनारस
- सम्मेद पर्वत पर ज्ञान प्राप्ति हुई ।
- चार व्रत दिये ।
  (i) सत्य
  (ii) अहिंसा
  (iii) अस्तेय (चोरी न करना)
  (iv) अपरिग्रह (धन इकट्ठा न करना)
  (v) ब्रह्मचर्य (ये महावीर स्वामी ने दिया)

- महावीर स्वामी (24वें)
  - जन्म – 540 B. C.   भाई – नन्दीबर्मन
  - स्थान – कुण्डग्राम
  - मृत्यु – पावापुरी (बिहार)
  - बचपन का नाम – वर्धमान
  - पिता – सिद्धार्थ
  - माता – त्रिशला
  - पत्नी – यशोदा
  - पुत्री – प्रियदर्शना   दामाद – जामालि

- 30 वर्ष में गृहत्याग । वर्धमान ने रथ पर सवार होकर गाजे बाजे सहित घर छोडा ।
- 13 माह पश्चात् वस्त्र त्याग भद्रबाहु की पुस्तक कल्प सूत्र से जानकारी मिलती है
- 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात् ज्ञान प्राप्ति ।
- जुम्बिकाग्राम मे रिजुपालिका/ऋजुपालिका नदी के किनारे पर साल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति
- प्रथम शिष्य – जामालि ।
- जमालि ने ही प्रथम विद्रोह किया ।
- आरम्भिक 11 शिष्यों को ‘‘गणधर’’ कहा जाता है ।

- ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महावीर व जिन (विजेता) कहलाये ।
- इन्होने त्रिरत्न की अवधारणा दी
  (i) सम्यक् ज्ञान
  (ii) सम्यक् दर्शन
  (iii) सम्यक् चरित्र

- पंचव्रत – महाव्रत (भिक्षुओ के लिए)
  अणुव्रत (गृहस्थों के लिए)

- ज्ञान के 5 प्रकार बताये ।
  (i) मति – पशुओं को भी यह ज्ञान होता है । इन्द्रियों जनित ज्ञान
  (ii) श्रुति ज्ञान – श्रवण ज्ञान
  (iii) अवधि ज्ञान – दिव्य ज्ञान
  (iv) मनः पर्यय ज्ञान – दूसरे के मन को जान लेना
  (v) कैवल्य ज्ञान – सर्वोच्च ज्ञान ।

- कर्म सिद्धान्त (कर्म फल) तथा पुनर्जन्म में विश्वास रखते है ।
- आत्मा को जीव कहते है ।
- पृदगल– जड पदार्थ को कहा है ।
- बन्धन – पृदगल जब जीव से चिपकते हैं, तब जीव बंधन में पड जाता है ।
- आस्रव – पृदगलो का जीव की तरफ प्रवाहित होना ।
- संवर – जीव की तरफ पृदगलो के होने वाले प्रवाह का रूक जाना ।
- निर्जरा – जीव से चिपके हुए पृदगलों का झड जाना ।
- मुक्ति – मोक्ष को मुक्ति कहा गया है ।

<u>अनन्त चतुष्टय</u> :–

I. अनन्त ज्ञान
II. अनन्त दर्शन
III. अनन्त वीर्य (बल)
IV. अनन्त आनंद

<u>त्रिरत्न</u> – सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र

<u>अनेकान्तवाद</u> :–

- यह जैन दर्शन का तत्वमीमांसीय सिद्धान्त है ।
- इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।
- इनमें से कुछ गुण नित्य होते है एवं कुछ गुण पविर्तनशील होते है ।

<u>स्यादवाद</u> :–

- यह जैन दर्शन का ज्ञान मीमांसीय सिद्धान्त है ।
- जैन दर्शन के अनुसार इस जगत में अनेक वस्तुएँ है एवं प्रत्येक वस्तु में अनेक गुण है ।
- हमारी बुद्धि न तो जगत की सभी वस्तुओं को पहचान सकती है एवं न ही एक वस्तु के सभी गुणों को पहचान सकती है, यह बुद्धि की सापेक्षता का सिद्धान्त है ।
- हमारा ज्ञान सदैव देश, काल, परिस्थिति के सापेक्ष होता है ।
- जैन धर्म में इसे सात जन्मान्ध के उदाहरण द्वारा समझाया गया है ।
  – जैन धर्म कर्मफल एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है ।
  – जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक वस्तु में आत्मा होती है ।

<u>जैन संगीति</u> :–

समय 298 BC

शासक चन्द्रगुप्त मौर्य

स्थान पाटलिपुत्र

अध्यक्ष स्थलबाहु व भद्रबाहु (स्थूलभद्र

- जैन धम्र दो भागों में विभक्त हो गया ।
- स्थलबाहु के अनुयायी–श्वेताम्बर (तेरापंथी)
- भद्रबाहु के अनुयायी – दिगम्बर (समैया)

1. 512 ई. वल्लभी (गुजरात) देवार्धि क्षमा श्रमण

<u>प्रथम संगीति</u> :–

– जैन धर्म दो शाखाओं में विभाजित हो गया –

जैन

दिगम्बर	श्वेताम्बर
1. भद्रबाहु के अनुयायी	1. स्थूलभद्र के अनुयायी
2. रूढीवादी	2. सुधारवादी
3. मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक है ।	3. मोक्ष प्राप्ति हेतु वस्त्र त्यागना आवश्यक नहीं है ।
4. महिलाओं को इस जीवन में मोक्ष सम्भव नहीं है ।	4. महिलाओं को इस जीवन में मोक्ष सम्भव है ।
5. भगवान महावीर अविवाहित थे	5. भगवान महावीर विवाहित थे ।
6. आगाम साहित्य को प्रामाणिक नही मानते	6. 96 आगम को प्रामाणिक मानते है ।

दिगम्बर

- बीसपंथी
- तारापंथी
- तेरापंथी

श्वेताम्बर

- पुजेरा/मन्दिरमार्गी
- ढूंढिया/स्थानकवासी
- तेरापंथी

द्वितीय बौद्ध संगीति :-

– आगम साहित्य का संकलन किया गया ।

जैन धर्म का योगदान :-

- जैनों एक सरल एवं आडम्बरविहीन धर्म दिया ।
- जैनों ने धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्ड, अन्धविश्वासों, वर्ण व्यवस्था आदि का विरोध किया ।
- जैनों ने नैतिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया । जैसे – सत्य, अहिंसा

  जिससे समाज का नैतिक उत्थान हुआ
- जैनों ने स्यादवाद जैसा व्यावहारिक दर्शन दिया ।

स्थापत्य कला में योगदान :-

I. गंगशासक चामुण्डराय ने श्रवणबेलागोल में बाहुबली की मूर्ति का निर्माण करवाया ।
II. रणकपुर एवं देलवाडा में सुन्दर मन्दिरों का निर्माण करवाया गया ।
III. मथुरा एवं अमरावती शैलियों में जैन धर्म से संबंधित मूर्तियों का निर्माण करवाया ।
IV. बाघ व एलोरा की गुफाओं से जैन धर्म से संबंधित चित्र मिलते हैं ।
    - जैनों ने शिक्षा के केन्द्रों को विकसित किया जिन्हें "उपासरा" कहा जाता है ।
    - जैनों ने आर्थिक सुधार किये जिससे अर्थव्यवस्था विकसित हुई ।

पतन के कारण :-

I. आत्मापीडन, कठोर व्रत व तपस्या पर बल
II. अंहिसा पर अत्यधिक बल के कारण लोग नियम धारण नहीं कर पाते ।
III. अत्यधिक कलिष्टता (स्याद्वाद, अनेकांतवाद, द्वैतवादी तत्वज्ञान आदि कों समझना जन साधारण के लिए कठिन) परिणामस्वरूप जैन धर्म तपस्वियों तक ही सीमित रहा ।
IV. जैन मतावालम्बियों में आंतरिक मतभेद-श्वेताम्बर व दिगम्बर
V. बाद में जैन साहित्य संस्कृत में लिखा गया, जिससे साधारण जनों के लिए समझना मुश्किल, अतः धर्म के प्रति दृष्टिकोण उदासीन होता चला गया ।
VI. प्रारम्भ में राजकीय आश्रय किन्तु बाद में नही ।
VII. धर्म प्रसार-अच्छे प्रचारको की आवश्यकता । कालांतर में इसका अभाव ।
VIII. बौद्ध धर्म का विस्तार व ब्राह्मण धर्म का पुनरूत्थान ।

संथारा प्रथा :-

जब किसी व्यक्ति को लगता है कि वो मृत्यु के निकट है तो वह एकांतवास धारण कर लेता है और अन्न जल त्याग देता है । मौन व्रत धारण कर लेता है तथा अन्त में देहत्याग देता है ।

Raj High Court में 2015 में रोक लगाई किन्तु Supreme Court ने इस निर्णय पर अंतरिम रोक लगा दी ।

आजीवक सम्प्रदाय

- संस्थापक – मक्खली पुत्र गोशाल
- भाग्यवादी थे ।

जैन व बौद्ध धर्म में समानताएँ :-

- दोनों अनीश्वरवादी दर्शन है ।
- दोनों नास्तिक दर्शन है ।
- वेदों को स्वीकार नहीं करते है ।
- दोनों कर्मफल सिद्धान्त एवं पुनर्जन्म को मानते है ।